MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319-9318

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Issue-42, Vol-11, April to June 2022

Patron
Dr. Bapu G. Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2022
Issue 42, Vol-11

Date of Publication
01 June 2022

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

27) शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के सृजनशील विद्यार्थियों की हिन्दी ...
अंशु श्रीवास्तव ||117

28) कोरवा और उराँव जनजाति में सांस्कृतिक विविधता–एक अध्ययन
भानु प्रताप सिंह & डॉ. रमेश चन्द्र पाठक, टाण्डा ||119

29) वैश्विक दौर के हिन्दी सिनेमा में स्त्रियों की समस्याएँ और संघर्ष
डॉ.विकास चौरसिया, गोला गोकर्णनाथ–खीरी ||124

30) कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी जीवन का यथार्थ
डॉ. देशमुख दस्तगीर सरदारमियां, औरंगाबाद ||127

31) तुलसीदास के साहित्य में आज के यथार्थ चित्र
डॉ.ओमप्रकाश दुबे, वाराणसी ||132

32) पयोधिकृत लमझना में चित्रित विविध जनजातियों के मौखिक–सूत्र
ज्योति कुशवाहा & डॉ. अभिनेष सुराना, दुर्ग (छ.ग.) ||134

33) स्वतंत्रता संघर्ष और हिंदी साहित्यकार
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, हिमायतनगर, नांदेड (महाराष्ट्र) ||138

34) महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके बालक–बालिकाओं के....
मधु तोमर, डॉ. मनीषा पाण्डे, बजरंगगढ़, गुना (म.प्र.) ||141

35) चिकित्सा समाजशास्त्र एक अवधारणात्मक व्याख्या
डॉ मीनाक्षी मीना, जोधपुर ||144

36) रामवृक्ष बेनीपुरी की पत्रकारिता का स्वरूप
अमित कुमार मिश्रा, डॉ अमरकांत कुमर, दरभंगा, बिहार ||150

37) भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में 'रथ के धूल भरे पाँव'
संतोष नागरे, गेवराई, जि. बीड (महाराष्ट्र) ||155

38) परिषदीय प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं की समस्याओं का....
डॉ. पवन कुमार, बिंदगामा, जलालपुर, समस्तीपुर (बिहार) ||160

39) एकल एवं संयुक्त परिवार में रहने वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के....
रश्मि शर्मा, डॉ. मनीषा पाण्डे, बजरंगगढ़, गुना (म.प्र.) ||164

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | April To June 2022 Issue-42, Vol-11 | 0138

33

स्वतंत्रता संघर्ष और हिंदी साहित्यकार

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
शोध लेखिका
हिंदी विभाग
हु.ज.पा.महाविद्यालय हिमायतनगर, नादेड (महाराष्ट्र)

देश की स्वतंत्रता के लिए १८५७ से लेकर १९४७ तक क्रांतिकारियों व आंदोलनकारियों के साथ ही लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है कि हम स्वतंत्रता के मृत्यू को बनाये रखने के लिए कृत संकल्पित रहे।

स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है, जो पीड़ा, कडवाहट, दंभ आत्मसम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे है। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने–अपने तरीके से बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अँग्रेजों को भगाने के लिए साहित्यकारों ने अपनी कलम से बखूबी भूमिका निभाई। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों से जनता में चेतना जागृत की।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में साहित्य ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू होते ही जब राष्ट्रवादी विचार उभरने लगे और विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य अपने आधुनिक युग में प्रवेश करने लगा, तब अधिक से अधिक साहित्यकार साहित्य को देशभक्ति पूर्ण उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लगे। दरअसल इनमें से अधिकांश साहित्यकारों का यह विश्वास था कि चूंकि वे एक गुलाम देश के नागरिक है, अत: यह उनका कर्तव्य है कि वे इस प्रकार के साहित्य का सृजन करें जो कि उनके समाज के सर्वतोन्मुखी पुनरूत्थान में अपना योगदान देते हुए राष्ट्रीय विमुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा।

भारतेंदु हरिशचंद्र का 'भारत–दर्शन' नाटक, जयशंकर प्रसाद का 'चंद्रगुप्त नाटक' प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि, कर्मभूमि में देशप्रेम की भावना ओतप्रोत है। यह कृतियाँ आज भी देशभक्ति जगाने में कारगर है। बाल गंगाधर तिलक का 'गीता–रहस्य' वीर सावरकर का '१८५७ का प्रथम स्वाधीनता संग्राम,' पंडित नेहरू की 'भारत एक खोज', शरदचंद्र का 'पथ के दावेदार' यह सारी ऐसी रचनाएँ है जिन्हें पढ़कर लोगों ने घर–परिवार त्याग देश की खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता के महासंघर्ष में कुद पड़े।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत–भारती' ने देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आव्हान किया

''जिसको न निज गौरव तथा निज देशका अभिमान है।

वह नर नही, नर–पशु निरा है और मृतक I Eeku gS*[1]

भारतेंदु हरिशचंद्र ने जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया, उसकी जड़े स्वाधीनता आंदोलन में ही थी। भारतेंदु और भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को पद्य और गद्य दोनों में अभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वीधीनता संघर्ष और सेनानियों की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोंगो की आस्था जगाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अँग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। भारतेंदु हरिशचंद्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अँग्रेजों द्वारा निरिह भारतीय जनता पर अन्याय–अत्याचार व लूट–खसोट का बढ़–चढ़कर उन्होंने विरोध किया। उन्हे इस बात की चिड़ थी कि अँग्रेज यहाँ से सारी संपत्ति लूट कर विदेश ले जा रहे थे। इस लूटपाट और भारत की बदहाली पर उन्होंने काफी कुछ लिखा। 'भारत–दुर्दशा'और 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नामक व्यंग के माध्यम से भारतेंदु ने तत्कालीन राजाओं की निरंकुशता, अँधरगर्दी और उनकी मूढ़ता को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है–

''भीतर–भीतर सब रस चुसै, हंसी–हंसी के तन–मन–धन मुसै।

जाहिर बातिन में अति तेज, क्यो सखि साजन, न सखि अँगरेज।''[२]

द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वाधीनता संग'ाम में अपनी लेखनी द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीरप्रसाद द्विवेदी मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि साहित्यकारों ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवार रूपी कलम को और तेज किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित किया।

माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान के भाव जागृत किए। देश पर मिटने वाले सैनिकों के मार्ग बिछ जाने की अदम्य इच्छा व्यक्त की —

''मुझे तोड़ लेना बनमालीय उस पथ में देना तुम फेक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ पर जाये वीर अनेक।''[३]

मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने की बात करते है —

हम क्या थे, क्या है, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारे मिलकर ये समस्याएँ सभी।''[४]

सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता तो सर्वविदित है, जिसने अँगे'जो की चूले हिलाकर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार का जोश भरनेवाली अनूठी कृति आज भी प्रसंगिक लगती है।

'' सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बुढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादीद की, कीमत सबने पहचानी थी,

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में छानी थी,
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,

बुंदेल हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी की रानी थी।''[५]

जयशंकर प्रसाद ने 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' में देशप्रेम की भावना जगाने का काम किया। सुमित्रानंद पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देशा' निराला ने 'भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे। इकबाल ने 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तां हमारा' लिखकर भारतीय एकता का मंत्र दिया।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भागीदारी निभाने में पीछे नही रहते और सोये हुए भारतीय जनमानस में भी उन्होंने अपनी रचनाओं के जरिए एक नई ताकत व एक नई उर्जा का संचार किया। प्रेमचंद की कहानियों में अँगे'जी हुकुमत के खिलाफ एक तीव' विरोध तो दिखा ही, इसके अलावा दबी, कुचली शोषित व आलसरशाही के बोझ से दबी जनता के मन में कर्तव्य—बोध का एक ऐसा बीज अंकरित हुआ जिसने सबको आंदोलन कर दिया था।

प्रेमचंद ने जन—जागरण का एक ऐसा अलख जगाया कि जनता हुंकार उठी। प्रेमचंद की बहुत सारी रचनाओं को अँगे'जों के शेष का शिकार होना पड़ा। उनकी रचनाओं पर ० रोक लगा दी गई। उनकी कई रचनाएँ जला दी गई। परंतु प्रेमचंद ने परवाह नही की और अपना लेखन सुचारु रूप से चालु रखा। उनपर दबाव डाले गए, डराया गया धमकाया गया लेकिन इन कोरि कोशिशों व दमनकारी नीतियों के आगे वे कभी हथियार नहीं डाले। उनकी रचना 'सोजेवतन' पर अँगे'जों ने आपत्ति जतायी और उन्हे अँगे'जी खुफिया विभाग ने पूछताछ के लिए तलब किया। अँगे'जी शासन का खुफिया विभाग अंत तक उनके पीछे लगा रहा। परंतु प्रेमचंद की कलम रुकी नही, बल्कि और प्रखर होकर स्वतंत्रता के संघर्ष में विस्फोट का काम रकती रही। उन्होंने लिखा —

''मै विद्रोही हूँ जग में विद्रोह कराने आया हुँ,
क'ांति—क'ांति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हुँ।'' [६]

प्रथम विश्व युद्ध के बाद परिस्थितियाँ तेजी से बदली। अब मुद्दा केवल भारतत की स्वतंत्रता का नही रहा। वह तो किसी भी कींमत पर लेनी ही थी। अब स्वाधीनता का मुल अर्थ और मु'य तथा चर्चा का मु'य आधार बन गये और 'आजारी किसके लिए' जैसे प्रश्न उठने लगे। निश्चय ही स्वाधीनता का अर्थ अब

केवल यही नहीं था कि अँगे जो का स्थान भारतीय ले लें। जैसे कि प्रेमचंद की एक कहानी 'आहुति' में रूपमति कहती है, 'कम से कम मेरे लिए तो स्वराज का यह अर्थ नहीं है कि जॉन की जगह गोविंद बैठ जाए।'[७] वह प्रश्न उठाती है कि, 'जिन बुराइयों को दूर करने के लिए आज हम प्राणों को हथेली पर लिए हुए है, उन्ही बुराइयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ाएगी कि वे विदेशी नही, स्वदेशी है? उसकी मांग स्पष्ट है, वह कहती है,'' अगर स्वराज आने पर भी संपत्ति का यही प्रश्न रहे और पढ़ा लिखा मजाज यों ही स्वार्थन्धि बना रहे तो मै कहूँगी, ऐसे स्वराज्य का व आना ही अच्छा।''[८]

स्वतंत्रता संग'ाम के अंतिम तीस वर्षो के दौरान भारतीय साहित्य ने निरंतर यह महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया कि आजारी का बुनियादी उद्देश्य क्या होगा। इस तरह साहित्य अधिक से अधिक स्वतंत्रता संग'ाम के वैचारिक पक्ष की ओर लगातार बढ़ता गया। परिणामस्वरूप साहित्य में न केवल स्वाधीन भारत के स्वरूप को चर्चा का विषय बनाया गया बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन जिस प्रकार का रूख अपना रहा था उसका भी ध्यान रखा गया।

हिंदी के अलावा बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तमिल व अन्य भाषाकें में भी माइकेल मधुसूदन, नर्मद, भारती आदि कवियों व साहित्यकारों ने राष्ट्रप्रेम की भावनाएँ जागृत की और जनमानस को आंदोलित किया। कवि गोपालदास नीरज का राष्ट्रप्रेम भी उनकी रचनाओं में साफ परिलक्षित होता है। जुल्मो–सितम के आगे घुटने न टेकने की प्रेरणा उनकी रचनाओं से प्राप्त होती रही। उन्होंने लोगों को उत्साहित करने के लिए लिखा है –

'देखना है जुल्म की रफ्तार बढ़ती है कहाँ तक
देखना है बम की बौछार है कहाँ तक।''[९]

हिंदी उर्दु के महान रचनाकार एवं पक्के राष्ट्रवादी प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में संघर्ष के उस दुखद पक्ष पर भारी चिंता व्यक्त की है जो उनके दो मु'य उपन्यासों, रंगभूमि और कर्मभूमि में शिक्षित राष्ट्रवादी नेताओं की प्रच्छन्न स्वार्थपरता का स्पष्ट रुप से पर्दाफाश किया गया है। इस उपन्यास के राष्ट्रवादी पात्र अपनी तमाम दुर्बलताओं के बावजूद अंततः शहिदों के रूप में दिखाये गये है। वे अपनी कमाजोरियों को महसूस करते है और उन्हे दूर करने की कोशिश करते है। लेकिन राष्ट्रवादी राजनीति का सबसे अधिक निराशजनक मत 'गोदान' में परिलक्षित होता है जो प्रेमचंद की उत्कृष्ट कृति तथा भारत के महानतम् उपन्यासों मे से एक है।

प्रसिध्द बंगाली उपन्यासकार शरतचंद्र चटोपाध्याय ने भी प्रेमचंद की भाँति 'पाथेर दासी' जैसा उपन्यास लिखा जिसमें उन क'ांतिकारियों को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया जो देश की मुक्ति के लिए क्रांतिकारी हिंसा का रास्ता अपना रहे थे। इस उपन्यासपर बि'टिश सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था।

आज के समय में भी वैसी धारदार रचनाओं की जरूरत है, जो जन–जन को आंदोलित कर सके, उनमें जागृति ला सके। भ्रष्टाचार व अराजकता को दूर कर हर हृदय में भारतीय गौरव–बोध एवं मानवीय–मूल्यों का संचार कर सके। आज के हमारे कवियों और साहित्यकारों का यह महती दायित्व बनता है कि वे इस देश के बारे में सोंचें और उसी परंपरा को जीवित रखें, जो मैथिलीशरण गुप्त की परंपरा है, प्रेमचंद की परंपरा है, नीरज की परंपरा है। और यह स्मरण रखें कि यहाँ पर राम का चरित्र लिखने के लिए वाल्मीकि तब मिलता है, जब राम इस योग्य होता है कि कोई उसके बारे में लेखनी चला सके।

कहने का अभिप्राय है कि यहाँ पर चाटुकारिता को अपना उद्देश्य नही माना जाता और दरबारी कवि होना यहाँ पर अभिशाप है। यहाँ दरबार कवि को ढुँढता है, कवि दरबारों को नहीं ढूंढते। यहाँ पर कवि किसी मोह के पशीभूत होकर नही लिखते। यहाँ कवि अपना दायित्व बखूबी समझता है, इसलिए राष्ट्र जागरण, राष्ट्रोत्थान और राष्ट्र उध्दार के लिए लिखता है।

इस प्रकार हम देखते है कि साहित्य और साहित्यकार ने जनता के आदर्शो को बदल प्रदान किया। ज्ञाना ही नहीं, देश की विमुक्ति के लिए उत्प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त, साहित्य ने राष्ट्रवादी आंदोलन तथा इसके नेताओं की कमजोरियों पर भी प्रकाश डाला है। हिंदी साहित्य ही नहीं बल्कि भारतीय साहित्य के अनेक ऐसे उपन्यास है जिनमें साहित्यकारों

ने देशवासियों में देशभक्तिपूर्ण भावनाएँ जागृत करने में लगे हुए थे।

संदर्भ :—

१) भारत—भारती — मैथिलीशरण गुप्त
२) भारत — दुर्दशा — भारतेंदु हरिशचंद्र
३) पुष्प की अभिलाषा — माखनलाल चतुर्वेदी
४) भारत — भारती — मैथिलीकरण गुप्त
५) झाँसी की रानी — सुभद्राकुमारी चौहान
६) सोजेवतन — प्रेमचंद — पृष्ठभूमि
७) आहुती — प्रेमचंद
८) आडती — प्रेमचंद
९) गोपालदास नीरज —
१०) रामकुमार वर्मा — हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
११) हजारी प्रसाद द्विवेदी — हिंदी साहित्य की भूमिका
१२) नंददुलारे वाजपेयी — हिंदी साहित्य : बीसवी शताब्दी आधुनिक साहित्य

⌘⌘⌘

महिलाओं की
स्थिति का उन
के समायोज
तुलनात्मक अ
के वि

शो
जीवाजी विश्व

डॉ

युवा व्यावस
बज

प्रस्तुत शो
आर्थिक स्थिति का
पर प्रभाव का तुल
महिलाअ
स्थिति सुदृढ़
बालक—बालिक
उपलब्धि पर
महिलाओं के ब
करना पड़ता है
होती है। प्रस्तु
शोधार्थी ने निम
परिवार
के विकास पर
और मानसिक
स्थिति पर निर्भ
स्तर व्यक्ति क
उसे प्रदान कर
धन एवं सामा